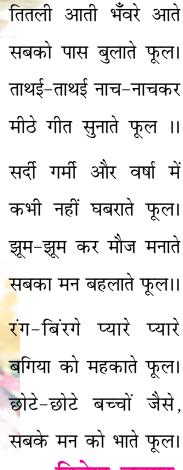
चौदहवाँ पाठ



छोटी-सी बिगया में देखो, कितने रंग जमाते फूल । सबके मन को मोहक लगते हैं। हँसते और मुस्काते फूल।।

जो भी बिगया में आता है सबको खूब रिझाते फूल। इधर भटकते, उधर मटकते तिनक नहीं शरमाते फूल।।



दिनेश कुमार





शब्दार्थ

बिगया - छोटा बगीचा

रंग जमाना - प्रभावित करना

रिझाना - प्रसन्न करना

मटकना - नृत्य की मुद्रा में सिर हिलाना

भाना - अच्छा लगना

भावार्थ

इस कविता में फूल की सुंदरता का वर्णन किया गया है। फूलों के कारण बिगया बहुत सुंदर दिखाई देती है। जो भी व्यक्ति बिगया में आता है, सुंदर –सुंदर फूलों को देखकर प्रसन्न हो उठता है। हवा के कारण इधर–उधर झूमते फूल ऐसे लगते हैं मानो वे सबका स्वागत करने के लिए सिर हिला रहे हों। फूल प्रत्येक ऋतु में प्रसन्न रहते हैं। वे हमें भी यही संदेश देते हैं।

रंग-बिरंगे प्यारे-प्यारे फूल बिगया में छोटे-छोटे बच्चों की तरह सब को अच्छे लगते हैं।

1. समान अर्थवाले शब्दों को रेखा खींचकर मिलाओ

रिझाना	लजाना
शरमाना	अच्छा लगना
मौज मनाना	सुगंधित होना
महकना	खुशी मनाना
भाना	आकर्षित करना



2. कविता की पंक्तियाँ पूरी करो

- 1. छोटी-सी बगिया में देखो
- 2. इधर मटकते उधर मटकते
- 3. झूम-झूम कर मौज मनाते

3. कविता के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो

- 1. फूल सबका मन किस तरह मोह लेते हैं?
- 2. फूल किसे अपने पास बुलाते हैं?
- 3. फूल सबका मन कैसे बहलाते हैं?
- 4. फूल सबके मन को क्यों भाते हैं?

